चेतना

रामनाथ
रा.जं.सं.,रूड़की

आज हमारे भारत देश में बढ़ते आतंकवाद का वाद अब अमरीका देश को भी स्पष्ट सुनाई देने लगा है। क्योंकि जब स्वयं पर बीतने लगती है तो सब समझ आता है कि जब अमरीका जैसी महाशक्ति इस आतंकवाद के समूल विनाश में लगती दिखाई दी तथा दूसरों को भी समर्थन देने की याद आई है। आज अमरीका चाहता है कि लादेन तथा उसके समर्थकों को कटघरे में खड़ा किया जाय जैसे अब अमरीका ने अफगानिस्तान के विरूद्ध युद्ध शुरू किया, चारों ओर यह देख आतंक के खिलाफ हर मानस तैयार हुआ यही सब कुछ बड़े समय से भारत जो काश्मीर में भुगत रहा है तथा समूचे देश को अवगत कराता रहा परंतु अमरीका जैसे देश इसे भारत का अपना समझता रहा और हमारे दुःखों को नकारता रहा है।

जब आतंकवाद की लपेट अमरीका पर पड़ी तो उसे महसूस हो गया कि आतंकवाद क्या है। जब अमरीका के वर्ल्ड ट्रेड टॉवर को ही नहीं बल्कि वहाँ के हजारों कार्य करने वाले मासूम बेगुनाह लोगों को मौत की नींद सुला दिया। ऐसी कल्पना न हीं अमरीका न कोई दूसरा देश कर सकता है। आज अमरीका का दूसरे सभी देश राष्ट्र आतंकवाद के खिलाफ एक साथ मिल कर आतंक खत्म करने की बात कर रहे हैं। अब हम भारतवासी सुकून महसूस कर रहे हैं। अब कुछ देश उस महाशक्ति को हर संभव सहायता जैसे आतंकवादियों के ठिकाने, उनके ट्रेनिंग सेन्टर आदि के नक्शे देने तक को तैयार हुए हैं। हमार देश भारतवर्ष पिछले 50 सालों से जम्मू–कश्मीर में आतंकवाद झेल रहा है।

ऐसा लगता है कि हम बिखर रहे हों, टूट से गये हों हजारों परिवार उजड़ गये लाखों बच्चे अनाथ हो गये। लम्बे समय से उनके बच्चें कैम्पों में गुजारा करते हैं। उनके बच्चें असहाय की तरह पल रहे हैं। मगर उनकी किसी को कोई चिन्ता नहीं आज हम भारतवासीयों की सोच इतनी गिर चुकी है कि अपने भाईयों और देशवासियों का दुःख, दर्द महसूस नहीं होता केवल अपनी चिन्ता में लगे हैं। केवल धर्म, जाति, भाषा व कोटे के नाम पर बांट देने में माहिर हैं। धर्म के नाम पर संस्थायें पनप रही हैं। जनता की चिन्ता कम व अपने फायदे की चिन्ता ज्यादा है। यही हमारा व हमारे देश का दुर्भाग्य है। आज धर्म–निरपेक्षता एक शानदार विचार और धर्म आस्था देश की आवश्यकता है और हम विखण्डता की बात करते हैं।

हमारी स्थिति इस कदर गिर गयी कि स्वयं पर आस्था कम और दूसरों पर भरोसा अधिक है शायद अमरीका को हमारा दुःख नजर आ जाए तो आतंकवाद से छुटकारा दिला दे पर मुझे इस पर शक है कि सब देशों की नितियां केवल अपने हितों तक ही सीमित हैं। अतः वाशिंगटन का समूल आतंकवाद को नेस्तनाबूत करने का निश्चय उसने अपने साधनों तक ही सीमित है। अमरिका को कश्मीर या हमारी क्या चिन्ता, इसे तो अंजाम हमें ही देना होगा और इसे समाप्त हमें ही करना होगा। पाकिस्तान का मजहबी जनून एक सूत्रीय कार्यक्रम रहा है। पाकिस्तान ने प्रगति पर कम व हिन्दुस्तान का विरोध पर अधिक ध्यान दिया है। वे अपने प्रांतों में स्वतंत्रता बुनियादी अधिकार तो दे नहीं पाता बाकी कश्मीरी भाईयों की चिंता में वह रात–दिन आँसू बहा रहा है। वह मूहाजिरों कि मुहिम को पचाता नहीं और उन्हें इस्लाम का परोपकारी समझता है। उन पर बेदर्दी से जुल्म करना अच्छा समझता है। यहां की जनता को रायशुमारी की महारत पढ़ाना और यहां के जन–जीवन को बरबाद करने के लिए आतंकवाद को बढ़ावा देना इसका मजहब है।

कश्मीरी भाईयों को उनका अधिकार देना मजहब में नहीं है। पिछले समय से भारत व उसके प्रदेशों में उथल–पुथल मचाना इसका काम है। मगर हम भारत–वासियों को चेतना कब आयेगी हम यह कब तक झेलते रहेंगे ? कुछ वर्ष पहले इस पर हमारे नेताओं ने विचार भी किया। अर्थ यह है कि यदि कोई सरकार देश हित में कुछ करना चाहे तो वह सक्षम है। आज देश को कड़े कदम की जरूरत है। इधर–उधर देखने की जरूरत नहीं आतंकवाद को जड़ से मिटाना ही होगा यही धर्म भी है। इसी में देश का हित है। धर्म निरपेक्षता देश के हित के लिए एक अच्छा सिद्धान्त है। यह हमारी कमजोरी का द्योतक नही होना चाहिए। इसलिए चाहे हिन्दू हो या मुस्लिम हो या सिख हो या ईसाई हो कट्टरवाद के छूट नहीं होनी चाहिए सभी भारतवासी हैं। शान्ति एवं सौहार्द से जीना और फलना–फूलना चाहते हैं। हम में यह चेतना होनी चाहिए देश के नेतृत्व में भी जागृति आये मेरे भारत को सोने की चिड़िया कहा है। इसे सदा सोने की चिड़िया ही बनाये रखे यही हमारी कामना है।

देश में सबसे बड़े भू–भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

सुभाष चन्द्र बोस